DR.BRR GOVERNMENT DEGREE COLLEGE,
डॉ.बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय,
JADCHERLA, जड्चेर्ला
MAHABUBNAGAR DIST, TELANGANA
जिला: महबूब नगर, तेलंगाना राज्य

Department of Hindi / हिन्दी -विभाग

Student Study Project on “Kabir ki Bhakti Bhavana”
छात्र अध्ययन परियोजना कार्य “कबीर की भक्ति भावना”

प्रस्तुति / Submitted by

S.No.	Roll.No.	Name of The Student	Class
1	20033006468029	Mohd Munawar	**B.Sc. MPCs 2 year**
2	20033006468036	S.Kartikeya	**B.Sc. MPCs 2 year**
3	20033006468038	S.Vaishnavi	**B.Sc. MPCs 2 year**
4	20033006441012	E.Nagalaxmi	**B.Sc. MPCs 2 year**
5	20033006441014	K.Srikanth	**B.Sc. MPCs 2 year**

पर्यवेक्षक / Supervisor

डॉ.नरसिंह राव कल्याणी एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी. /

Dr.NarsmhaRao Kalyani M.A.,M.Phil.,Ph.D.

सहायक आचार्य, / Asst.Professor

हिन्दी-विभाग/ Dept. of Hindi

DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE, JADCHERLA

Certificate

This is to certify that the Present Project work entitled "Kabir ki Bhakti-Bhavana" is the Bonafide work of 1.Mohd.Munawar 2.S.Kartikeya 3.S.Vaishnavi 4.E.Nagalaxmi 5.K.Srikanth under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

Date : 12/02/2022

Dr.K.Narsimha Rao
Dept of Hindi

HEAD
Department of Hindi
Dr. BRR. Govt. Degree College
JADCHERLA-509 301
Dist. Mahabubnagar (T.S.)

Principal
DR.BRR GOVT. DEGREE COLLEGE,
JADCHERLA

Principal
Dr. BBR Government Degree College
Jadcherla, Dist.Mahabubnagar

DECLARATION

We hereby declare that the investigation results incorporated in the present Study Project entitled "Kabir ki Bhakti-Bhavana" were originally carried out by us under the Supervision of Dr.K.Narsimha Rao . Asst.Prof of Hindi. Dr.BRR.Govt.Degree College, Jadcherla. No part of this work has been submitted to any other University for the award of any Degree.

S.No.	Roll.No.	Name of The Student	Class	Signatures
1	20033006468029	Mohd Munawar	BSC (MPCs)-II	Munawar
2	20033006468036	S.Kartikeya	BSC (MPCs)-II	[signature]
3	20033006468038	S.Vaishnavi	BSC (MPCs)-II	S.Vaishnavi
4	20033006441012	E.Nagalaxmi	BSC(MPC)-II	E.Nagalaxmi
5	20033006441014	K.Srikanth	BSC(MPC)-II	K.srikanth.

Date : 12/ 02/ 2022

Acknowledgement

We are thankful to our principal Dr. Appiya Chinnamma , who stands as an inspiration behind doing this student study-project work. We owe our gratitude for her concern and necessary feedback on the prepared study projects.

We are also thankful to our Supervisor Dr. Narasimha Rao Kalyani Assistant Professor, Hindi Department, who extended his full cooperation in doing this student-project work meaningfully. His unparalleled suggestions and informative inputs have contributed a lot in presenting this project work in a beautiful and systematic manner. We express our gratitude to him.

Finally, we extend our heartfelt thanks to our Teashers, friends and all Dr. Burgula Ramakrishna Rao Government Degree College, Jadcherla family, whose best wishes are always with us.

****

धन्यवाद ज्ञापन

इस छात्र अध्ययन - परियोजना कार्य को करने की प्रेरणास्रोत एवं प्रोत्साहन देने वाली आदरणीय प्राचार्या **डॉ.अप्पीय चिन्नम्मा जी** के प्रति हम श्रद्धा पूर्वक नमन करते हैं, जिनके अतुलनीय वात्सल्यपूर्ण शब्द परियोजना - कार्य करने के प्रति ऊर्जा का काम करती रही हैं। आपके आशीर्वाद एवं कृपा हम पर सदा के लिए बरसते रहें यही प्रार्थना है।

इस छात्र - परियोजना कार्य करने में सम्पूर्ण सहयोग देने वाले श्रद्देय गुरुजी **डॉ . नरसिंह राव कल्याणी जी** सहायक आचार्य , हिन्दी विभाग, को धन्यवाद प्रकट करना मात्र एक औपचारिकता है। आपके सुझाव एवं सूचनाएँ इस परियोजना कार्य को सुंदर एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने में बहुत-बहुत योगदान दिये हैं। आपके प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं।

और अंत में अपने अध्यापकों , मित्रों एवं समस्त **डॉ.बूर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय स्नातक महाविद्यालय, जड्चेर्ला** परिवार के प्रति हम हृदय गहनतल से धन्यवाद अर्पित करते हैं, जिनकी शुभकामनायें सदा हमारे साथ हैं।

****

Abstract

"Kabir ki Bhakti Bhavana"

Kabir Das is prominent among the saint poets of Bhakti period. Kabir Das was not only a saint but also a poet, social-reformer and philosopher . Kabir Das is one of the main poets of Nirguna Kavyadhara of Bhakti period in Hindi literature, he has accepted Ram as Nirguna and he gives the message of worship of Nirguna, His *Ram Bhavna* is completely matched with *Brahma Bhavna*. Kabir is a devotee first and then he is a poet. He has expressed revolt on caste, sex, glamor, superstition, idolatry, violence, Maya, untouchability, etc. To get away from all these Kabirdas ji says, to get absorbed in the spirit of devotion.

Love has been given attractive and effective importance in the devotional spirit of Kabir, he believes that even in human love, there is God's grace. Devotion only says that life is meaningless, such a person keeps coming again and again in the world after taking birth. Kabir's

devotion is easy. In the devotion of Kabir, special importance has been given to concentrated mind, continuous sadhana, mental worship, mental chanting and satsangti. In this way the devotional spirit of Kabir is very wonderful.

अनुक्रमणिका

* **Hindi Students Study Project - Synopsis / रूपरेखा**

1. प्रस्तावना

2. कबीर दास का परिचय

3. कबीर की निर्गुण उपासना

3.1. कबीर - एकेश्वरवाद

3.2.कबीर की अद्वैतवाद

3.3.राम नाम की महिमा

3.4.कबीर की वात्सल्य की भावना

3.5.कबीर की कांता भाव

3.6.कबीर की माधुर्य भाव की भक्ति

3.7.कबीर की दास्य भाव की भक्ति

3.8.कबीर की वैराग्य भावना

3.9.कबीर की प्रपत्ति भाव

3.10. नाम स्मरण

3.11. ईश्वर में विश्वास

3.12. कबीर की तन्मयता रूप

4.निष्कर्ष

रूपरेखा

Hindi Students Study Project – Synopsis

1. Title: शीर्षक: कबीर की भक्ति भावना

2. Statement of the Problem or Hypothesis / समस्या या परिकल्पना का विवरण: "कबीर की भक्ति भावना "यह विषय परियोजना कार्य का विषय है। इसके अंतर्गत कबीर दस जी के साहित्य में व्यक्त भक्ति भावना का अध्ययन किया जाएगा। इसके आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि भारतीय साहित्य में विशेषतः मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में कबीर दस की भक्ति भावना

की विशेषता क्या है। यह भी देखने का प्रयास किया जाएगा किकबीर अपनी भक्ति पद्धति से सामाजिक एकता को किस प्रकार सुदृढ़ करनेका प्रयास किया है।

3.Aims and Objectives लक्ष्य& उद्देश्य: इस परियोजना कार्य के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं -

1.कबीर दास का जीवन परिचय से अवगत होना है।

2. हिन्दी भक्ति साहित्य में कबीर दास महत्व को जानना है।

3. निर्गुण भक्ति पद्धति कि विशेषता को उजागर करना है।

4. कबीर दास कि भक्ति भावना कि विशेषताओं को उजागर करना है।

4. Review of Literature साहित्य की समीक्षा: हिन्दी साहित्य में कबीरदास के साहित्य पर बहुत सारे शोध और परियोजना कार्य सम्पन्न हुए हैं । विशेषतः उनकी भक्ति-भावना पर तथा समाज-सुधारक के रूप में कबीर दास के योगदान को रेखांकित करते हुए कई अध्ययन हुए हैं। इन अध्ययनों में भक्ति का स्वरूप तथा सामाजिक विकास के बारे में कबीर दास के विचारों को उल्लेख किया गया है।इस परियोजना कार्य में विशेष रूप से कबीर कि भक्ति-भावना कि विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

5. Research Methodology शोध क्रियाविधि:- शोध के कई पर्यायवाची शब्द हैं। जैसे -अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषण,खोज आदि। साधरणतः साहित्य में शोध और अनुसंधान शब्द ही प्रचलित हैं। किसी विषय का उसके विभिन्न पक्षोंकों तथ्यों ,तत्वों, आधारों, तर्क शीलता आदि कसौटियों पर परखना ही शोध कहलाता है। शोध के कई प्रकार हैं। जैसे - सर्वेक्षण पद्धति , आलोचनात्मक पद्धति ,समाजशास्त्रीय पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, समस्यात्मक पद्धति आदि। हमने इस परियोजना कार्य के लिए समाजशास्त्रीय शोध विधि को अपनाते हुये कबीर दास के साहित्य में भक्ति भावना कि विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

6. Analysis of Data. डेटा का विश्लेषण:- संत कवि कबीर दास के बीजक में उल्लेखित भक्ति संबंधी साहित्य का आध्यन करेने केलिए हमने विशेष रूपसे

द्वितीय वर्ष स्नातक के पाठ्यक्रम में निर्धारित कबीर दास के दोहों को आधार बनाया है।उन दोहों में उल्लेखित प्रत्येक अंश से संबन्धित अन्य दोहों को कबीर कृत बीजक (संपादक श्यामसुंदर दास, माताप्रसाद गुप्त),कबीर-ग्रंथावली,कबीर के दोहे आदि ग्रन्थों में खोजा है। इसकेलिए हमने **जडचेरला** में स्थित शाखा-ग्रंथालय, **महबूब नगर** में स्थित जिला ग्रंथालय आदि में जाकर परियोजना सामाग्री को संग्रहीत किया है। इस सामग्री को व्यवस्थित ढंग से निर्धारित परियोजना कार्य के अनुसार उपयोग किया गया है।

7.Findigsजाँच - परिणाम:- इस परियोजना-कार्य का यह परिणाम निकाला है कि कबीर कीभक्ति भावना भारतीय समाज को एकता में पिरोने में सफल रही है। विशेष रूप से समाज के निम्न-वर्ग के लोगों में परब्रह्म में आस्था जगाने का काम कबीर ने किया। इस अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि भक्ति कोई आडंबर कि वस्तु नहीं है। कोई भी व्यक्ति पूरी श्रद्धा के साथ परमात्मा का ध्यान करें तो मुक्ति संभव है। निराकार उपासना का बीज मंत्र यही है।

8. Conclusion and Suggestion निष्कर्ष और सुझाव :- कबीर दास अपनी भक्ति-भावना से तत्कालीन सामाजिक वाशमताओं को दूर करने का प्रयास किया है। विशेष रूप से सगुण भक्ति के कारण समाज के एक वर्ग को मंदिरों से दूर रखने का प्रयास होरहा था , ऐसे समय भगवान की भक्ति करने का सरल उपाय समाज के उन लोगों को देने का प्रयास किया है । इस प्रकार कबीर की भक्ति भावना समाज के सभी लोगों को परमात्मा के प्रति आस्था जगाने में मदद की ।

****

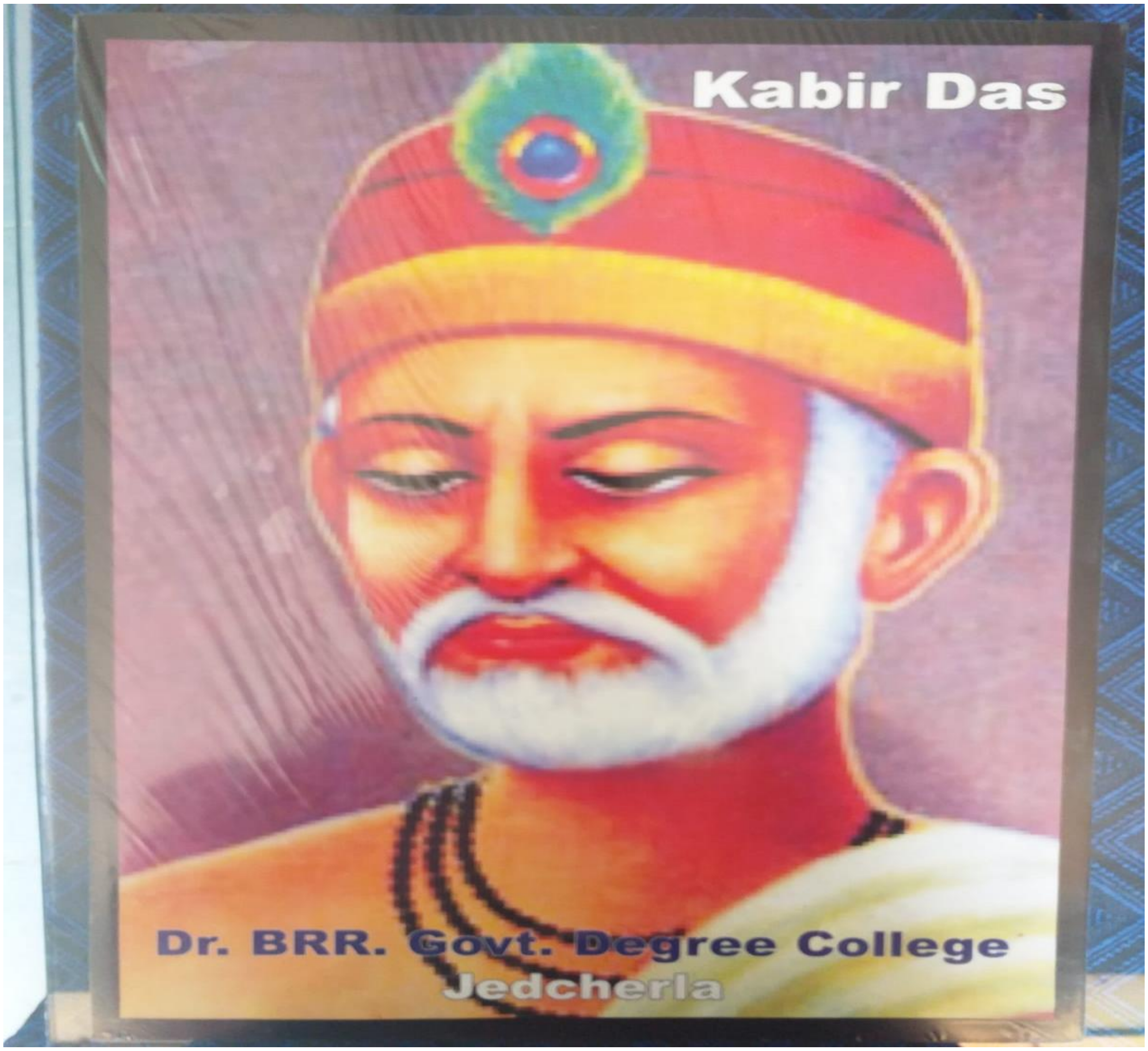

कबीर की भक्ति भावना

1. **प्रस्तावना:**

भक्तिकाल के संत कवियों में कबीर दास प्रमुख हैं। कबीर दास न केवल संत कवि थे, बल्कि वे अपने जीवन में एक साथ कवि, व्यक्ति-सुधारक , समाज-सुधारक और दार्शनिक भी थे।

2.**संत कवि कबीरदास का परिचय:** संत कबीर दास का जन्म सन1398(संवत 1455) में काशी के एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। उनका पालन-पोषण नीरू-नीमा नामक जुलाह दंपति ने किया। कबीर की पत्नी का नाम लोई था और उनके दो सन्तानें थीं -एक पुत्र कमाल और एक पुत्री कमाली। श्री रामानन्द जी इनके गुरु माने जाते हैं।

कबीर दास निरक्षर थे। इनके प्रवचनों का संग्रह इनके शिष्य धर्मदास ने **बीजक** ग्रंथ में किया है।बीजक में तीन भाग हैं -साखी ,सबद और रमैनी ।इनकी भाषा साधुक्कड़ी है।

कवि का कर्म समाज और व्यक्ति का निर्माण करना होता है। इसके लिए साहित्य एक माध्यम है। कबीर दास इस कर्म को बखूबी निभाया है। व्यक्ति निर्माण केलिए

उनके द्वारा दिये गए उपदेश आज भी प्रासंगिक हैं। ये उपदेश मनुष्य को सामाजिक प्राणी के रूप सम्पूर्ण विकास करने में मददगार सिद्द होते हैं। कबीर की मृत्यु मगहर में सन 1518 (1575 संवत) में हुई ।

3.कबीर की निर्गुण उपासना :

कबीर दास भक्ति काल के निर्गुण काव्यधारा के प्रमुख कवियों में से एक है उन्होंने राम को निर्गुण रूप में स्वीकार किया है तथा वह निर्गुण की उपासना का संदेश देते हैं उनकी राम भावना ब्रह्म भावना से सर्वथा मिलती है। कबीर पहले भक्त हैं फिर कवि है। उन्होंने जाति-पाती, काम-धाम, चमक-दमक, दिखावा,पहनावा, अंधविश्वास, मूर्तिपूजा, हिंसा, माया, छुआछूत, आदि पर विद्रोह भावना प्रकट की हैं। इन सब से दूर होकर भक्ति की भावना में लीन होने के लिए कबीरदास जी कहते हैं। कबीर की भक्ति भावना को हम निम्नलिखित रुप में देख सकते हैं-

उन्होंने राम को निर्गुण रूप में स्वीकार किया है तथा वह निर्गुण राम की उपासना का संदेश देते हैं-

"निर्गुण राम जपहुं रे भाई"

उनके अनुसार राम फूलों की सुगंध से भी पतला अजन्मा और निर्विकार है वह विश्वा के कण-कण में स्थित है। उसे कहीं बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं है उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा है की मिल की नाभि में कस्तूरी छिपी रहते हैं और मेरे उस सुगंध का स्रोत बाहर ही ढूंढता फिरता है जबकि व उसके भीतर ही विद्यमान होता है।

"कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूंढे वन माहिं।
ऐसे घट-घट राम हैं दुनिया देखे नाहिं।"

कबीर के अनुसार ईश्वर हर जगह मौजूद है वे कहते है कि ईश्वर कण-कण में समाया है हर इंसान के शरीर में, हर मन में, हर आंखों में ईश्वर का निवास है इसलिए उसे हमें ढूंढने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उसे एकाग्र मन से स्मरण करने की आवश्यकता है।

"प्रियतम को पतिया लिखूं, को कहीं होय विदेस।
तन में, मन में, नैन में, ताकौं कहा सन्देश।"

3.1. कबीर - एकेश्वरवाद :

कबीर ने बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध किया और एकेश्वरवाद का संदेश सुनाया ब्राह्म नहीं ब्राह्म, विष्णु, महेश आदि को बनाया है। इसलिए उन्होंने निराकार ब्रह्म कोही महत्वपूर्ण स्थान दिया और अवतार को जन्म-मरण के बंधन से ग्रसित बताया।

"अक्षय पुरुष इक पेड है, निरंजन बाकी बार।
त्रिदेवा शाखा भयें पात भया संसार।
कबीर की अलौकिक प्रणयानूभूति

कबीर के काव्य में परमात्मा के प्रति अलौकिक प्रणयानूभूति की अभिव्यक्ति की गई हैकबीर वैसे तो खंडन मंडन की राह पर चलते रहे हैं और हिंदू मुसलमानों को खरी-खोटी सुनाते रहे पर अपनी रहस्यवादी रचनाओं में से वे अत्यंत मष्दुल और कोमल दिखाई देते हैं कबीर के रहस्यवाद शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव है-

"जल में कुंभ कुंभ में जल है भीतर बाहर पानी।
फूटा कुंभ जल जलाहें समाना, यह तत का हो गयानी।"

3.2.कबीर की अद्वैतवाद :

ब्रह्मा, जीव, जगत माया आदि तत्वों का निरूपण उन्होंने भारतीय अद्वैतवाद के अनुसार किया है उनके अनुसार जगत में जो कुछ भी है वह ब्रह्म ही है। अंत में सब ब्रह्म में ही विलीन हो जाता है।

"पाणी ही ते भाया, हिम है गया बिलाय।
जो कुछ था सोई भाया अब कुछ कहा ना जाए।"

संसार की मिथ्या व माया के भ्रम का आख्यान भी कबीर ने अद्वैतवादी विचारधारा के अनुरूप किया है।

"कबीर माया पापणी हरि सूं करै हराम।
मुखि कड़ियाली कुमति की कहण न देई राम।"

3.3.राम नाम की महिमा :

कबीर ने विभिन्न नामों में राम नाम को पूरी गंभीरता से और बार-बार लिया है। उन्होंने अपने आराध्य के लिए विभिन्न नामों का प्रयोग किया है - राम, साईं, हरि, रहीम, खुदा, अल्लाह आदि प्रमुख है। यह सर्वविदित तथ्य है कि कभी निर्गुण राम के उपासक हैं। वह बार-बार नाम स्मरण की प्रेरणा देते हुए कहते हैं।

"कबीर निर्भय राम जपु, जब लागे दीवा बाति।
तेल धटा बाती मुझे, तब सोवो दिन राति।"

3.4.कबीर की वात्सल्य की भावना :

कबीर के काव्य में यत्र तत्र वात्सल्य का मनभावन रूप सामने आता है कभी स्वर को बालक और ईश्वर को जननी के रूप में मान्यता देते हुए कहते हैं

"हरि जननी मैं बालक तोरा
काहे ना अवगुन बकसहु मेरा।"

3.5.कबीर की कांता भाव :

ईश्वर की कांता भाव से स्मरण करते हुए स्वयं को उनकी जननी के रूप में प्रस्तुत किया है अपने पति ईश्वर को याद करते हुए कवि की आत्मा आवाज देती है

"दुलहिन गावहु मंगलचार
हम घर आयहु राजा राम भरतार।"

3.6.कबीर की माधुर्य भाव की भक्ति :

माधुरी भाव की भक्ति को मधुराभक्ति या प्रेम लक्ष्णा भक्ति कहा जाता है भक्त स्वय को जीवात्मा एवं भगवान को परमात्मा मन मान कर दांपत्य प्रेम की अभिव्यक्ति जहां करता है वहां मधुरा भक्ति मानी जाती है माधुर्य भाव की भक्ति कबीर दास के दोहे में बखूबी देखने को मिलता है।माधुरी भाव कबीर किस पंक्ति में देखने को मिलता है-

"आंखड़ियां झांई पड़ी पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियां छाला पड़्या राम पुकारि पुकारि।।"

आत्मा का जीव आत्मा के प्रति विरह भाव कबीर ने बड़े मनोयोग से व्यक्त किया है। प्रियतम परमात्मा की बाट जोहते-जोहते आंखों में झांई पड़ गई , राम को पुकारते हुए जीभ में छाला पड़ गया है।

3.7.कबीर की दास्य भाव की भक्ति :

कबीर भले ही निर्गुण मार्गी भक्त कवि हो किंतु उनमें दस्य भाव की भक्ति दिखाई देती है।तुलसी की भक्ति जिस प्रकार दास्य भाव की है उसी प्रकार कबीर की भक्ति भावना में भी दस्य भाव दिखाई पड़ता है। वह प्रभु को स्वामी एवं स्वयं को दास सेवक या गुलाम कहते हैं

मैं गुलाम मोही बेची गोसाई।

3.8.कबीर की वैराग्य भावना :

कबीर के अनुसार वैराग्य का तात्पर्य संसार को छोड़कर जंगल में निवास करना नहीं है। संसार में रहते हुए भी मन में संतोष वृत्ति लाना, विषय भोगों के प्रति अनासत्त होना, आशा तृष्णा से मुक्त होना वैराग्य है। कभी संसार के रिश्ते नाते को क्षणभंगुर मानते हैं ये सारे संबंध स्वार्थमय है ऐसा कह कर कबीर वैराग्य जगाने का प्रयास करते हैं।

3.9.कबीर की प्रपत्ति भाव :

प्रपति का अर्थ है शरणागति एवं आत्मनिवेदन। कबीर भगवान को सर्वशक्तिमान मानकर उसकी शरण में जाकर अपनी रक्षा की प्रार्थना करते हैं।

कबीर तेरी सरनि आया, राखि लेहु भगवान।

आचरण की शुद्धता

कबीर ने आचरण की शुद्धता के लिए कुसंग का त्याग करने एवं सत्संग करने पर बल दिया है। कबीर का मत है कि जब तक मन में काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि विकार भरे हैं तब तक हृदय में भगवान की भक्ति नहीं आ सकती भक्ति मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को अहंकार एवं कपट का भी परित्याग करना पड़ता है।

3.10. नाम स्मरण :

कबीर दास के अनुसार केवल नाम मात्र से ही ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है इसलिए वे कहते हैं कि हमें सच्चे मन से ईश्वर को स्मरण करते रहना चाहिए। जब हम एकाग्रचित्त होकर ईश्वर के नाम का जप करते है, तभी वह फलदायी होता है। वे ऐसे नाम स्मरण का विरोध करते हैं जिसमें मन दसों दिशाओं में घूमता रहता है -

माला तो कर में फिरै जीभ फिरै मुख माहि।
मनुवा तो दस दिसि फिरै सो तो सुमिरन नाहि ॥

3.11. ईश्वर में विश्वास :

कबीर को ईश्वर की महत्ता का पता है इसलिए वे पूरी श्रद्धा और विश्वास से से अपने ईश्वर की आराधना करते हैं। कबीर को पूरा विश्वास है कि परमात्मा पूर्ण समर्थ है। वह राई को पर्वत एवं पर्वत को राई करने की सामर्थ्य रखता है-

सांई सूं सब होत है बन्दे थै कछु नांहि।
राई थे परबत करै, परबत राई मांहि ॥

3.12. कबीर की तन्मयता रूप :

कबीर अपने प्रियतम के प्रति पूरी तरह समर्पित है वह अपने प्रियतम के साथ जुड़ना चाहते हैं। यारों भक्ति के चरम उत्कर्ष को प्रकट करता है

"आंखिन की करि कोठरि, पुतरी पलग बिछाय।
पलकन की चिक डारि के, पिय को लिया रिझाया।"
कबीर की उपासना में अनन्यता और अटल भक्ति का स्वरूप प्रकट होता है।

निष्कर्ष :

कबीर की भक्ति भावना में प्रेम को आकर्षक और प्रभावी महत्व दिया गया है उनका मानना है कि मानव प्रेम में भी ईश्वर की कृपा होती है कन कन में समाया राम ही मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रेरणाधार है कबीर के सच्चे भक्त थे विभक्ति की महिमा गाते नहीं अघाते।भक्ति ही जीवन को व्यर्थ बताते हैं ऐसा व्यक्ति बार-बार जन्म लेकर संसार में आता जाता रहता है। कबीर की भक्ति सहज है। वे ऐसे मंदिर के पुजारी है जिसकी फर्ष हरी हरी घास जिस की दीवारें दसों दिशाएं हैं जिसकी छत नीले आसमान की छतरी है या साधना स्थान सभी मनुष्य के लिए खुला है। कबीर की भक्ति में एकग्र मन, सतत साधना, मानसिक पूजा अर्चना, मानसिक जाप और सत्संगति को विशेष महत्व दिया गया है। इस प्रकार कबीर की भक्ति भावना बहुत ही अद्भुत है।

******

संदर्भ सूची

1 काव्य निधि - डिग्री द्‌वितीय वर्ष

2 गद्‌य दर्पण - डिग्री प्रथम वर्ष

3 कबीर कृत बीजक - संपादक श्यामसुंदर दास (इन्टरनेट पर उपलब्ध)

4 कबीर-ग्रंथावली- माता प्रसाद गुप्त (इन्टरनेट पर उपलब्ध)

5 इंटरमीडियट की हिन्दी पुस्तकें

6 इंटरनेट पर की जानकारी

7 कबीर के दोहों में व्यक्तित्व विकास के सूत्र - डॉ.नरसिंहरा कल्याणी

(लेख - डैली हिन्दी मिलाप दिनांक 23 जून 2013)

× ePaper Daily Shubhlabh
dailyshubhlabh.com

DAILY शुभ लाभ
खबरें जो सोच बदल दे

डॉ. बीआरआर कॉलेज जडचर्ला में कक्षा संगोष्ठी आयोजित

हैदराबाद (शुभ लाभ ब्यूरो)
डॉ. बुर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय महाविद्यालय (बीआरआर कॉलेज), जडचर्ला के हिंदी विभाग द्वारा कक्षा संगोष्ठी (स्टूडेंट सेमिनार) का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में संत कबीर दास के दोहे पर द्वितीय वर्ष के छात्र-छात्राओं ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में बीकॉम द्वितीय वर्ष की छात्राओं सलमा फातिमा, श्रीलेखा व यासमीन बीए के छात्र मुजतबा मोइनुद्दीन, प्रवीण कुमार, पूजिता, नंदिनी ने भाग लिया। छात्रों ने अपनी पसंद के कबीरदास के दोहों की व्याख्या करते हुए सामाजिक संदर्भ पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. नरसिम्हा राव कल्याणी ने कबीर दास के दोहे की प्रासंगिकता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका साहित्य सामाजिक एकता के लिए कटिबद्ध है।

Hyderabad Edition
Nov 10, 2021 Page No. 2
Powered by : eReleGo.com

కబీర్ దాసు బోధనలు

సంత్ కబీర్‌దాస్ జయంతి

సంత్ కబీర్‌దాస్‌కు నివాళులర్పిస్తున్న అధ్యాపకులు

జడ్చర్లటౌన్, జూన్ 24 : జడ్చర్లలోని ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాలలో గురువారం సంత్ కబీర్‌దాస్ జయంతి నిర్వహించారు. కళాశాల ప్రిన్సిపాల్ డాక్టర్ అప్పీయ చిన్నమ్మ ఆధ్వర్యంలో సంత్ కబీర్‌దాస్ చిత్రపటానికి పూలమాల వేసి నివాళులర్పించారు. కార్యక్రమంలో వైస్ ప్రిన్సిపాల్ రవీందర్‌రావు, అధ్యాపకులు మహ్మద్ జలీల్ అహ్మద్, నీరజ, డాక్టర్ సదాశివయ్య, శ్రీనివాసులు, సుభాషిణి, రమాదేవి, లత, మంజుల, మార్కేండయ, మాధవి, నాగరాజు, నర్సింహులు, వెంకటేశ్వర్లు, బీరయ్య, నందకిశోర్ పాల్గొన్నారు.

శుక్రవారం, 25 జూన్ 2021

ఘనంగా సంత్ కబీర్ దాస్ జయంతి

కబీర్ దాస్ చిత్రపటానికి పూలమాల వేస్తున్న ప్రిన్సిపాల్

జడ్చర్ల, జూన్ 24 (ప్రభ న్యూస్): సంత్ కబీర్ దాస్ జయంతిని జడ్చర్ల డాక్టర్ బూర్గుల రామకృష్ణారావు ప్రభుత్వ డిగ్రీ కళాశాలలో హిందీ విభాగం ఆధ్వర్యంలో ఘనంగా నిర్వహించారు. ఈ సందర్భంగా ఆయన చిత్రపటానికి పూలమాలలు వేశారు. అనంతరం ప్రిన్సిపాల్ డాక్టర్ అప్పీయా చిన్నమ్మ మాట్లాడుతూ కబీర్ దాస్ బోధనలు నేటి సమాజానికి ఎంతగానో ఉపయోగపడతాయని, కబీర్ దాస్ మధ్యయుగంనాటి గొప్ప సంస్కర్త లలో ఒకరని అన్నారు. భక్తి ఉద్యమం ద్వారా సామాజికమార్పు తీసుకురావడంలో కబీర్ దాస్ ఎంతో కృషిచేశారని అన్నారు. ఈ కార్యక్రమంలో శ్రీనివాసులు, డాక్టర్ సదాశివయ్య, సుభాషిని, రమాదేవి, లత, మంజుల మార్కండేయ, మాధవి, నాగరాజు నర్సింలు, డాక్టర్ వెంకటేశ్వర్లు బీరయ్య, నందకిషోర్ తదితరులు పాల్గొన్నారు.

ఆంధ్రప్రభ Fri, 25 June 2021
https://epaper.prabhanews.com/c/61379570

महबूबनगर के जड़चर्ला में डॉ. बुर्गुला रामकृष्णा राव शासकीय महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा कक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें संत कबीरदास के दोहे पर द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किए। हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. नरसिम्हा राव कल्याणी ने संत कबीरदास को सामाजिक एकता का प्रतीक बताया।

डॉ. बुर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय महाविद्यालय में कबीर जयंती मनाई गई

संत कबीरदास की जयंती पर उनके चित्रपट पर माल्यार्पण कर डॉ. बीआरआर गवर्नमेंट कॉलेज में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

जड़चर्ला, 24 जून-(मिलाप ब्यूरो) महबूबनगर जिले के जड़चर्ला स्थित डॉ. बुर्गुला रामकृष्ण राव शासकीय महाविद्यालय में हिन्दी विभाग की ओर से संत कबीरदास की जयंती मनाई गई।

अवसर पर महाविद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ. ए. चिन्नम्मा ने कहा कि करीब के विचार आज के समाज के लिए बहुत ही उपयोगी है। इनके विचार सामाजिक परिवर्तन के लिए सहायक है। उन्होंने कहा कि कबीरदास एक समाज सुधारक थे। अवसर पर उपप्रधानाचार्य बी. रविन्दर राव ने कहा कि भारतीय दर्शन को बहुत ही सरल ढंग से जनता को समझाने वाले महान कवि कबीरदास हैं। इससे पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. नरसिंह राव कल्याणी ने भक्तिकाल की सामाजिक पृष्ठभूमि की व्याख्या करते हुए करीब की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में रसायन शास्त्र विभाग के अध्यक्ष मो. जलील अहमद, प्राणी शास्त्र के सहायक आचार्य नीरजा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक व अन्य ने भाग लिया।